Vol 2 Issue 10 April 2013

Impact Factor : 1.2018 (GISI)

ISSN No :2231-5063

Monthly Multidisciplinary Research Journal

GoldenResearch Thoughts

Chief Editor
Dr.Tukaram Narayan Shinde

Publisher
Mrs.Laxmi Ashok Yakkaldevi

Associate Editor
Dr.Rajani Dalvi

Honorary
Mr.Ashok Yakkaldevi

IMPACT FACTOR : 0.2105

Welcome to ISRJ

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2230-7850**

Indian Streams Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial Board readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

International Advisory Board

Flávio de São Pedro Filho
Federal University of Rondonia, Brazil

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya [Malaysia]

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus Pop

Mohammad Hailat
Dept. of Mathmatical Sciences, University of South Carolina Aiken, Aiken SC 29801

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Catalina Neculai
University of Coventry, UK

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Postdoctoral Researcher

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Department of Chemistry, Lahore
University of Management Sciences [PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Horia Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

Nawab Ali Khan
College of Business Administration

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University, Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University, Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary, Play India Play (Trust),Meerut

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU, Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Ph.D , Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.isrj.net

Golden Research Thoughts
Volume 2, Issue. 10, April. 2013
ISSN:-2231-5063

Available online at www.aygrt.isrj.net

ORIGINAL ARTICLE

हिन्दी कथा साहित्य में नारी की बदलती भूमिका।
(प्रेमचन्द के संदर्भ में)

निधि सैनी

हिन्दु गर्ल्ज कॉलेज, जगाधरी।

सारांशः

'' यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः'' से लेकर ''नारी तुम केवल श्रद्धा हो तक जो भव है उससे नारी के पावन रूप की प्रतिष्ठा का बोध होता है। नारी का इतिहास अनेक उत्थान–पतानों का इतिहास है। समय–समय पर नारी विषयक मानदण्डों में परिवर्तन होता रहा है। नारी का स्थान समाज में अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। नारी पूरे परिवार ही धूरी होती है शरीर का संचालन करने में जैसे रीढ़ की हड्डी का महत्त्व है वैसे ही परिवार का सूचारू रूप से संचालन नारी द्वारा किया जाता है। प्राचानी काल में नारी को महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त था। गार्गी, मैत्रेयी जैसी विदूषी नारियों ने वेदों के अध्ययन, आध्यात्मिक चर्चा आदि में पुरूष के साथ बराबर सहयोग दिया। कोई भी धार्मिक अनुष्ठान नारी के बिना सम्पूर्ण नहीं माना जाता था।

प्रस्तावनाः

नारी की स्थिति में धीरे–धीरे परिवर्तन आने लगा और उसे अधिकारों से वंचित किया जाने लगा। वह मुगलकाल में केवल भोग्या बनकर रह गई। उसे पर्दे में रखा जाने लगा और पुरूष उसे पांव की जूती समझने लगे।

आधुनिक काल में समाज में नारी की स्थिति में परिवर्तन आया। राजाराय मोहन राय, छत्रपति साहू, डॉ. अम्बेडकर आदि ने नारी को शिक्षित करने के लिए विशेष प्रयत्न किया और उनके प्रयत्नों के फलस्वरूप नारी की स्थिति में सुधान आया। प्राचीन युग की गार्गी, मैत्रेयी, से लेकर मीरा, महोदेवी तक का यह सफर प्रशंसनीय है।

प्रेमचन्द पूर्व एवं प्रेमचंद युगीन ग्रामीण नारी शोषण का शिकार बनती रही। यह घर ग्रहस्थी में फंसी स्वतंत्र रूप से अपनी भूमिका का निर्वा न कर सकी, परन्तु नगरीय जीवन जीने वाली नारी की स्थिति अच्छी थी। वह पुरूष के कंधे से कंधा मिलाकर कार्य करने लगी।

प्रेमचंद ने अपने उपन्यासों में नारी के वास्तविक स्वरूप का चित्रण किया है। ये नारी पात्र विशुद्ध भारतीय है। भारीय ग्राम और नगर के परिवेश में रहने वाले। उनके नारी पात्रों का एक क्रमिक विकास है। जो बृजरानी से आरम्भ होकर धनिया के रूप में आगे बढता है। उनके उपन्यासों में एक ओर विरजन जैसी सती साध्वी नारियों है। जिनके जीवन का ध्येय केवल एकांत साधना है तो दुसरी ओर सुखदा और मुन्नी जैसी नारियाँ सार्वजनिक क्षेत्र को ही अपने जीवन का लक्ष्य समझकर मैदान में आ जाी है। एक ओर सामाजिक विषमता से पीडित सुमन का विवश व्यक्तित्व है। तो दुसरी ओर धनिया जैसा कर्मठ नारी पात्र जिसके स्वरों मे युग–युग की पीड़ा समाई हुई है तथा जिसमें विद्रोह की प्रबलता भी है। प्रेमचन्द की प्रत्येक नारी का व्यक्तिगत इतिहास है ओर सबके पीछे एक सामाजिक दर्शन भी उनमें बोलता है।

प्रेमचंद की नारियों को तीन श्रेणियों मे बांटा जा सकता हैः– बाबू वर्ग, किसान वर्ग और जमीदार वर्ग।

बाबू वर्ग की नारियाँ प्रेमचंद द्वारा चित्रित बाबूवर्ग की नारियां समाज की रूढ़ियों से और आर्थिक अवयसस्थाओं से प्रताडित है। इसके सामने समस्याएं हैं समाधान नहीं, अतः वे विद्रोहिणी हो जाती है। ''बृजरानी और पूर्णा दोनों विधवा है। बृजरानी प्रताप से प्रेम करती है किुं दुर्भाग्यवश विवाह होता है। आवारा कमलाचरण से। दुर्भाग्य की मार को अपने धैर्य और प्रयत्न से वह सौभाग्य में बदल देती है। किन्तु दुर्भाग्य उसका पीछा नहीं छोडता और उसे जीवन भर वैधव्य सहने को विवश कर देता है। उसके जीवन की निराशा साहित्य की ओर से प्रवृत करती है। प्रताप के प्रति उसका पवित्र प्रेम हृदय में ही समाधिस्थ होकर रह जाता है। प्रताप उसके लिए सन्यासी हो जाता है।''[1]

''प्रतिज्ञा'' की पूर्णा भी विधवा है। वह शारीरिक सुख के लिए तडपी है। किन्तु प्रेमचंद जी उसे वनिता भवन पहुँचाकर भक्ति की ओर उन्मुख कर देते है। उसकी इश्क मजाजी भावना इश्क हकीकी में बदल कर शुद्ध हो जाती है।

''सेवासदन'' की सुमन प्रेमचन्द का स्मरणीय नारी पात्र है। सुमन का सौन्दर्य और योवन उसे रूपगर्विता बना देता है। विवाह के बाद जब वह ससुराल पहूँचती है। तो पहनने, ओढने और श्रृगांर करने की लालसा और अधिक बढ़ जाती है। परन्तु पति की कृपणता उसे अपनी कामना पूर्ति का अवसर नहीं देती थी। उसका व्यवहार भी सुमन के प्रति अच्छा नहीं था। रात–दिन के आर्थिक अभाव भी उसके जीवन में निरन्तर विरक्ति और कटुता भर देता है। उधर सामने रहने वाली भोली वैश्या का वैभव उसके हृदय की अतृप्त और दमित वासनाओं को जागृत कर देता है। पति द्वारा तिरस्कृत सुमन को भोली वैश्या के घर पर ही आश्रय मिलता है। यहां वह बडी तीव्रता से इस झुठे सम्मान की ओर अग्रसर होती है किन्तु जितनी जल्दी वह उधर मुडती है उतनी ही तीव्रता से उसका हृदय घृणा से भर जाता है। अंत में वह 'सेवासदन' आश्रम में अनाथ स्त्रियों की सेवा करते हुए अपना जीवन व्यतीत करती है।

''निर्मला'' उपन्यास की नायिका निर्मला के सामने वृद्ध विवाह की समस्या है। उसे बराबर की उम्र के तीन पुत्रों की माता बनकर असमय ही वृद्धा बनकर जीवन यापन करना पड़ता है।

''गबन'' की रतन जो निर्मला की तरह अनमोल विवाह के अभिशाप से ग्रस्त है। पति की मृत्यु के बार समस्त पूँजी भी उनकी नहीं रह पाती उसे 'जलपा' का ही सहारा लेना पड़ता है। ''गबन'' की जलपा का व्यक्तितव प्रेम के ताने–बानों से निर्मित है।

Title : *हिन्दी कथा साहित्य में नारी की बदलती भूमिका। (प्रेमचन्द के संदर्भ में)* **Source:Golden Research Thoughts [2231-5063]** *निधि सैनी* **yr:2013 vol:2 iss:10**

प्रेमचन्द जी द्वारा चित्रित बाबू वर्ग की ये नारियों बडी स्वाभिमानिनी एवं विद्रोहिणी हैं परिस्थितियों ने इन्हें जकड़ लिया है। इसलिए इनका विद्रोह अंत तक नहीं टिक पाता। वे सामाजिक कुरीतियों एवं शोषण के विरूद्ध संघर्ष भी करती है। किन्तु यह संघर्ष ऊंचे स्तर तक पहुचं नहीं पाता।

किसान वर्ग की नारियाँः–

''प्रेमचन्द जी के उपन्यासों में किसान वर्ग की नारियों बडी कर्मठ है। इस वर्ग की नारियों में धनिया, सिलिया, सोना, मुन्नी, सलोनी, पुनिया आदि है। 'गोदान' की धनिया प्रेमचन्द द्वारा चित्रित सर्वाधिक सशक्त नारी पात्र है। उसके जीवन का कोना–कोना विद्रोह की ज्वाला से प्रज्ज्वलित होता रहता है। वह सोचती है। कि हमने जमींदार के खेत जोते है। तो वह अपना लगान ही तो लेना। उसकी खुशामद क्यों करें?उसके तलवे क्यों सहलायें?धनिया की यह आवाज समस्त शोषित वर्ग की पुकार है। समय पडने पर धनिया होरी को सुनाने से नहीं चुकती फिर भी दोनों का जीवन आदर्श प्रेम में रमा रहता है।''[2]

''कर्मभूमि'' की सलोनी गाँव की काकी है। भुख, दरिद्रता आदि अभावों से उसकी कमर टूट जाती है। किंतु उसके हृदय की विशालता वैसी ही रहती है। वह जीवन की समस्त अतृप्त इच्छाओं को लेकर गोलियों के सामने अपनी झुकी कमर को तानकर खडी हो जाती है। ''कर्मभूमि'' में ही एक विवादास्पद नारी पात्र है मुन्नी। वह पहले सती साध्वी के रूप में दिखाई देती है। किन्तु अमरनाथ को रिझाने के लिए वह अशलील नृत्य करती है। वस्तुतः मुन्नी का चरित्र बडा ही गतिशील है। वह समाज में देवी के नाम से प्रसिद्ध हो जाती है।

'' कायाकल्प'' की लौंगी एक रखेल होते हुए भी उच्च प्रेम का आदर्श प्रस्तुत करती है। लौंगी प्रेमचन्द का ऐसा नारी चरित्र है, जिसके चित्रण का उद्देश्य प्रेम, कर्त्तव्य–परायणता, त्याण, स्नेह, सेवाभा, उदारता, निर्भयता आदि उदात्र भावनाओं का एकत्र प्रदर्शन है।

'गबन' की जग्गो निम्नवर्ग की नारी होते हूऐ भी उदारता आदि श्रेष्ठ गुणों का ऊचां उदाहरण हमारे सामने पुस्तुत करती है।

जमीदार वर्ग की नारियाँः–

''प्रेमचन्द जी जमीदार वर्ग की नारियों के प्रति उदार नहीं थी। उनकी दृष्टि में जमीदार वर्ग की नारियों अपने पुरूषों की तरह विलासिनी होती है। फिर भी विद्याा, श्रद्धा, रेणुका और इंदु जैसी नारियों के हृदय में अपने धन के लिए किसी प्रकार का गर्व नहीं है। विद्या ज्ञानशंकर की पत्नी है। तथा सुन्दर, सौम्य एवं उदार विचारों वाली है। वह राय सहब से कह देती हैः– 'मै जिस पुरूष की स्त्री हूँ। उस पर संदेह करके अपना परलोक नहीं बिगाड सकती। वह आपके कथनानुसार कुचरित्र सही, दुरात्मा सही, कुमार्गी सही, परन्तु मेरे लिए पूज्य और देवतुल्य है''[3]

'' गोदान'' की मिस मालती नारी जीवन के विभिन्न उदाहरण प्रस्तुत करती है। मालती आरमी में स्वच्छदता को ही नारी स्वतंत्रता समझती है किन्तु मेहता के सम्पर्क में आने पर उसमें सदभावनाएं प्रस्फुटित होती है। विवाह न करके वह परस्पर मित्र बने रहकर जीवन यापन करना अच्छा समझती है।

''कायाकल्प'' की ''देवप्रिया तो एक जादुगरनी जान पडती है। विनोद और विलास ही उसके जीवन का उद्देश्य है। वह बार–बार विध्वा होती है औन नए पति को पाकर सधवा बन जाती है।''[4]

निष्कर्षतः

यह कहा जा सकता है कि प्रेमचन्द के कथा–साहित्य में नारी के विभिन्न स्वरूप की झांकी मिलती है। जो समाज में नारी की स्थिति को रेखांकित करती है। तथा प्रेमचन्द के नारी पात्र वर्तमान में भी प्रसांगिक है।

संदर्भ सूची

1.उपन्यासकार प्रेमचन्द, पृष्ठ 136
2.प्रेमचन्दः घर मे 'शिवरानी देवी' पृष्ठ 162–163
3.प्रेमचन्दः एक विवेचना (डॉ.. इन्द्रनाथ मदान) परिशिष्ट –2
4.प्रेमचन्द के नारी पात्र (ओम अवस्थी) पृष्ठ–47

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished research paper.Summary of Research Project,Theses,Books and Books Review of publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- International Scientific Journal Consortium Scientific
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- EBSCO
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database

Golden Research Thoughts
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.isrj.net